International Journal of Applied Research 2018; 4(9): 269-271

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2018; 4(9): 269-271
www.allresearchjournal.com
Received: 16-07-2018
Accepted: 22-08-2018

रौशन कुमार यादव
नेट/जे० आर० एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, शोधार्थी विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
रौशन कुमार यादव
नेट/जे० आर० एफ०/गोल्ड मेडलिस्ट, शोधार्थी विश्वविद्यालय मैथिली विभाग, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

कविता ओ यथार्थ आओर राजकमल

रौशन कुमार यादव

सारांश
कोनो वादक मूलमे दू प्रकारक चिन्तन विद्यमान रहैत अछि मानवतावाद आ यथार्थवाद। कार्लमार्क्स मानव मस्तिष्कें ओकर चेतना आ समाजिक अस्तित्वक संग मानवतावादकें सम्बन्ध करबैत बुझैत छथि। दोसर पक्ष यथार्थवाद, साहित्यमे मानव जीवनक यथार्थ–चित्रण थिक। कार्लमार्क्सक द्वन्द्वात्मक भौतिकवादपर आधारित ई प्रगतिवादी विचारधारा कविवर वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'क काव्यमे आयल अछि। सामाजिक यर्थाथक नग्न चित्रांकन व्यंग्य–वक्रोक्तिक संग खुलि कऽ आयल अछि। ओना यात्रीजी कहियो, कतहु अपनाकें कोनो वादक बन्हनमे नहि लपेटऽ चाहलनि। ने ई अपनाकें प्रगतिवादी कवि होयबाक दाबा कयलनि आ ने प्रयोगवादक अग्रदूत मानलनि, मुदा हिनक कविताक पद–पदमे रागात्मक अनुभूतिक आधारपर व्यंग्यार्थ आ लक्ष्यार्थमे यथार्थक चित्रण तथा एकस एक अभिनव बिम्ब प्रतीकक प्रयोग सहजहि हिनका प्रगतिवादी, प्रयोगदवादी कहबा लेल वाध्य कऽ दैत अछि।

प्रस्तावना
मैथिली साहित्यमे काव्य सृजन करबाक परम्परा विद्यापतिक समयसँ आबि रहल अछि। विद्यापतिक काव्यक विलक्षणताकें अभूतपूर्व मानल गेल अछि। आधुनिक कालमे आबिकऽ काव्यक विकास तऽ भेल, मुदा एकर गुणवत्तामे किछु ह्रास भेल। सामान्य लोकक ई धारणा भऽ गेल जे मैथिली कवितामे रजनी–सजनी छोड़ि आर किछु नहि अछि, मुदा किछु एहन कवि भेलाह जे कविताकें नव शिखरपर पहुँचौलनि। एहिमे रामकृष्ण झा 'किसुन', वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', राजकमल, आरसी प्रसाद सिंह आदि छथि।
कविता रचनाक दृष्टिकोणसँ राजकमल चौधरी एकटा नव युगक, नव वादक प्रारम्भ कयलनि आ मैथिली साहित्यक कवितामे लागल बीझ सभकें छोड़ौलनि। एकटा नव स्वरूपक संग विश्व साहित्यक मध्य मैथिली कविताकें अपन स्थान देऔलनि।
मैथिली साहित्यमे हिनक काव्य संकलन 'स्वरगंधा'क आगमन 1958 इ.मे भेल। हिनक एहि संग्रहक अबिते मैथिली साहित्य जगतमे हरबिररो सन मचि गेल। कियो गुणगान कयलनि तऽ कियो उपहास कयलनि, मुदा एहि सभमे उपहासकक संख्या अधिक छल। हिनक 'स्वरगंधा'कें प्रायः दुर्गन्धेटा कहल गेल, मुदा हिनक 'स्वरगंधा'क प्रकाशनसँ मैथिली कविताक क्षेत्रमे क्रान्ति आयल। 'स्वरगंधा'क कविता कयक शताब्दीसँ सैंतल–दबल भूगर्भक ज्वालामुखी सदृश फूटल। तुक, छन्द, तालक दाबनिसँ दाबल, शब्दक आडम्बरसँ जकड़ल कवितामे, पुरना घिसल–पीटल शिल्प–शैलीमे जन–जीवनक मूल्यांकनक यथार्थ चित्रण होयब दुरुह होमय लागल। एहि विकट परिस्थितिमे राजकमल युग–पुरुषक रूपमे ठाढ़ भेलाह। ओ कविताकें कामिनीक संज्ञासँ मुक्त कयलनि। रजनी–सजनीक वर्णनक धरोहरि, प्रेमी–प्रेमीकाक क्रीडाक अभिव्यक्तिक स्रोत, तुक–छन्दक अपरिहार्यताक परिधि, एहि सभसँ बाहर आनि कविताकें स्वतंत्र अभिव्यक्तिक प्लेटफार्म, जन–जीवनक जीवन्त चित्रणक माध्यम आ जनसाधारणसँ सम्पर्क स्थापित करऽवला विधा बनौलनि।
कविताक संदर्भमे हुनक मान्यता रहलनि ''कविता आब नहि अछि नायिका भेद नख–शिख, शृंगार कविता नहि अछि रति विपरीतक उनटल ग्रीवाहार कविता थिक जन–जीवनक अग्नि प्राण जय घोष।''[1]
एहि 'स्वरगंधा'क कवितासँ नवीन धारा प्रारम्भ भेल। इतिहासकार डॉ० दुर्गानाथ झा 'श्रीश' हिनका प्रयोगवादक प्रथम व्याख्याता कहलनि अछि ''राजकमल चौधरी मैथिली काव्यधारामे प्रयोगवादकप्रथम व्याख्याता ओ शक्त रचियता छथि। वादक रूपमे प्रयोगक ध्वजा लऽ इएह सभसँ पहिने क्रान्ति करबाक हेतु ठाढ़ भेलाह।'' [2]
एहि प्रगतिवादी कवितामे भौतिकता आ समाजिकताक प्रतिष्ठापन भेल। सौन्दर्यक चित्रणक अपेक्षा नग्न यथार्थक चित्रण खुलिकऽ होबऽ लागल। एहिमे नव शिल्प, नव विम्ब, नव प्रतीक आ विषयानुसार

भाषाक प्रयोग होबऽ लागल। प्रयोग ओना तऽ प्रत्येक युगमे होइत रहल अछि जाहिसँ साहित्यमे प्रयोगवादक नव स्वरूप सभ मुखर होइत रहैत अछि। मैथिलीमे प्रयोगवादक प्रवेश हिन्दी साहित्यक संग भेल अछि। 'स्वरगंधा'क प्रकाशन 1958 इ.मे होयब स्पष्ट करैत अछि जे एहिमे संकलित कविता ओहिसँ पूर्वक रचना थिक जे हिन्दी साहित्यमे प्रयोगवादी काव्यक समय छल।

राजकमलक अधिकांश कविताक जन्मक कोनो ने कोनो कारण रहल अछि। जीवन आ मृत्युक सदृश समाजिक चरम–सत्य, शाश्वत सत्यक ज्ञान होयब कविता लिखबा लेल आवश्यक होइत अछि। राजकमल अपन कविता सभमे अपन व्यक्तिगत अनुभव आ अनुभूतिके ँ रखलनि। ओ मानव जीवनक नेपथ्यक सत्यके ँ निर्भिकतापूर्वक आ दृढ़ विश्वास संग व्यक्त कयने छथि–

"जाबत अछि जीवित एक्कोटा बूढ़बोको गौतम
नइँ हटि सकत ई तम
गबिते रहती नारी परपुरुषक सहगान
करिते रहत पुरुखजाति सहस्र अहिल्याक धोआन" [3]

मनुष्य मात्र जे एहि धरतीपर जन्म लेलक अछि ओकरा सभसँ पहिने होइत छैक जीबाक लालसा आ एहि जीबा लेल आवश्यक अछि रोटी। वस्तुतः एहि धरतीपर कोनहुँ जीवधारीके ँ पहिल समस्या होइत अछि ओकर भूख। भूखक इच्छाक पूर्ति कयने बिना जीयब असम्भव अछि, मुदा मनुष्यक शरीरमे भोजनक भूखक संगएकटा आओर भूख रहैत अछि, ओ थिक शरीरक भूख। ई स्वभाविक होइत अछि। ई वासनानुभूति मानसिक उद्वेग थिक। ई मनुष्यक आवश्यकता ऊपर एकटा अपरिहार्य वस्तु थिक। राजकमल अपन साहित्यमे एहि शारीरिक भूखक उपेक्षा नहि कयलनि आ एकरा स्वीकारो ओतबे दूर धरि कयलनि अछि जतय धरि जीवनमे जरूरी बुझलनि अछि। एहि क्रममे सामान्य जीवन–जगतसँ बिम्ब–प्रतीक तऽ ग्रहण करबे कयलनि पौराणिक पात्रक बिम्ब–प्रतीकक आश्रय सेहो लेलनि। एकर आश्रय लैत ओ सहजतापूर्वक कहबामे समर्थ होइत छथि। राजकमल 'शयन कक्षक नारी' शीर्षक कवितामे कहैत छथि–

हे मेनका
अहाँक इन्द्रधनुष आँचर पर अंकित करय वासना चित्र
प्रस्तुत छथि नहि आइ कियो विश्वामित्र
ने कोनो महाराजा दुष्यन्त
कए सकताह अहाँक शकुन्तलाक असहायताक अन्त
खेत तमबामे, बान्ह बन्हबामे लागल अछि लोक
चारूकात पसरल अछि हृदयक नहि, पेटक बहुशोक" [4]

सामाजिक यथार्थक अभिव्यक्ति राजकमलक कविताक मूल प्रयोजन थिक। समाजक ऊपरी सतहपर देखाइ पड़ऽवला निर्जीव आ पतनोन्मुखी विकृति हिनकर कविताक विषय होइत छनि। प्रत्येक युगक समाजिक यथार्थक दू टा रूप होइत अछि, पहिल रूप ओहि शक्तिक थिक जे मरणोन्मुख होइत अछि, जर्जर होइत अछि आ दोसर रूप ओहि जीवन्त शक्तिक होइत अछि जे भविष्यमे अनन्त विकासक सम्भावनासँ युक्त रहैत अछि। राजकमल एहि मरणोत्मुख आ जर्जर शक्तिक प्रति अपन विवशता नहि देखबैत छथि। ओ भविष्यमे आबऽवला सफलता आ विजयक प्रति आस्थावान होइत समाजिक कुरीति, शोषण, भ्रष्टाचारक विरोधमे क्रान्तिक आह्वान करैत छथि। चाहे ओ सम्राज्यवाद हो वा पूंजीवाद, किंवा सामन्तवाद। राजकमल समाजिक विषमता, अन्याय, अत्याचार, शोषण आ दमनक यन्त्रणाक एही यथार्थके ँ चिन्हलनि जे ई सभ सामन्तवादक देन थिक। एकरे कारण समाजमे वर्ग–विभाजन होइत रहल अछि। शोषक आ शोषितक अस्तित्व एतहिसँ उत्पन्न होइत अछि। एक दिस पेटक ज्वालासँ ज्वलित मानव तऽ दोसर दिस उर्वशीक नाचमे रमल आ विलास करैत सामन्त। राजकमल एहि विकराल खाधिके ँ भरि देबाक पूर्ण आस्थासँ अपन क्रियाशीलताक परिचय दैत छथि–

"हे उर्वशी
के देखत आब आदि मुद्राक चकित मुदित असल नाच
अभाव–चुल्हि जरैयऽ, लोक लगबैयऽ प्राण–जारिनि आँच
सम्राट विक्रम–पुरुषादि भए गेलाह दरिद्र
सामन्ती–जीवन केयरी भेल अछि लक्ष–लक्ष छिद्र
आ, हम सभ अर्जुन, महाभारत जितबामे लागल छदी
मरल नहि, सुतल नहि, जागल छी।" [5]

राजकमलक कवितामे सामन्ती–जीवनक दुर्दशाक चित्रण नव–नव बिम्ब–विधानक संग अति मार्मिक ढंगे भेल अछि। समान्य जनताक शोषणकऽ विलासमे डूबल सामन्तवादक अपन लेखनीक माध्यमे सशक्त विरोध, दलित वर्गक साहसकेँ देखार करब राजकमलक उद्देश्य छनि। एकरा ओ अत्यन्त प्रभावी ढंगसँ उपस्थापित कयलनि। शोषित–शोषक बीच होबऽवला अस्तित्वक रक्षाक लड़ाइके ँ महाभारत कहब कतेक प्रभावोत्पादक आ मार्मिक अछि से उक्त पंक्तिमे स्पष्ट अछि।

महाकवि विद्यापति अवसान भेल कयक शताब्दी भऽ गेल, मुदा अपन गीत, अपन पदावलीक प्रभावसँ ओ हमरा सभक समाजमे एखनो अमर छथि। हुनकर एहि प्रभावके राजकमल सेहो स्वीकारै छथि, मुदा समयक हिसाबे एकर स्वर सेहो चाहै छथि। समाजक स्थति–परिस्थितिक बीच राजकमल अपन रचना रखै छथि। ओ विद्यापतिके ँ उपेक्षित नहि करै छथि। ओ समाजमे होइत नीक–बेजायक सूचना विद्यापतिके ँ देबऽ चाहैत छथि। समाजमे होइत अन्याय सभक सूचना, पुरुष समाजक चुप्पीक सूचना, समाजक राधारूपी बालिकाक देह व्यापार करबाक सूचना, ओकर विवशताक सूचना, महाकवि विद्यापतिके ँ दैत छथि। राजकमल विद्यापतिके ँ जनाबऽ चाहैत अछि जे कृष्णरूपी नर आब समाजमे अपन अस्तित्वके ँ बिसरि गेल अछि। समाजक राधा सभपर होइत अन्यायके ँ ओ मूक भऽकऽ देखि रहल अछि–

"गीत तोहर जागृत करइए एखनउँ सूतल प्राण
तइँ सभकाल करइ छी सभ मिलि तोहर चरचाध्यान
× × × ×
रतिविपरीत आ रतिअभिसारक लिखने छह कत गीत
आब ने शृंगारक जुग छइ, ने छइ कतउ सिनेहपिरीत
युद्ध, अकाल, बाढ़ि, रउदी सँ अछि जनसमाज भयभीत
कतउ ने भेटय शान्ति छवो भरि, किओ ने भेटय मीत
× × × ×
राधा तोहर बेचि रहल छथि देह, कृष्ण तोहर अवसन्न
× × × ×
शक्तिउपासक हे विद्यापति, हे जनकवि राखह देसक लाज
आबह कंसक राज हटा कए लाबह कृष्णक समता राज।" [6]

समस्त समाजमे पसरल अभाव आ ओकर वातावरणमे लोक स्वार्थक जालमे फसिक व्यक्तिगत भऽ जाइत अछि। सभ अपना–अपना लेल सोचऽ लगैत अछि। रौदीक प्रचण्ड प्रकोपसँ धरतीक को ँढ़ चटकैत रहैत अछि। कोसीक बाढिमे डूबल समाज अपन व्यथापर चिन्ता करैत, नोर बहबैत रहैत अछि। आ एहि रोदी–दाहीसँ उत्पन्न होइत अछि अभाव आ भूख। एहि भूखसँ तपैत पेटक कारणे ँ मेटा जाइत अछि समाजसँ लोकक प्रेम, सिनेह, बिकाइत अछि माय–बहिनक देह आ तकरे मेटाकऽ नव समाजक स्थापना हेतु राजकमल महाकवि विद्यापतिक आह्वान करैत छथि। ओना एहि कविताक भावसँ बुझाइत अछि जे ई कविता राजकमलक प्रारम्भिक रचना रहल हेतनि, कारण एकर शब्दमे कतोक रास विवशताक भाव उठैत अछि। एकर रचनाकाल

उपलब्ध नहि अछि, मुदा अर्तनिहित यथार्थ आ वास्तविकताक बाह्य समीक्षासँ स्पष्ट होइछ जे लेखनी मँजि गेलाक बाद एहन विवशता नहि देखा सकैत अछि, किन्तु एते रास बात होइतहुँ राजकमलक लेखनीक परिपक्वता आ क्रान्ति पथसँ विलगाव रहितो कविताक व्यंग्य आकर्षक अछि। प्रारम्भिको रचनाक संदिग्धता रहैत कविताक प्रभावोत्पादकता, सम्प्रेषणीयता आ अभिव्यक्ति नवीन आ उत्तम अछि–

"यएह हमर श्रद्धांजलि थिक, आ यएह हमर आह्वान
तोरे स्वर मे गबइत छी, मिथिला जन–जीवनके गान
तोहर स्मृतिजल सँ भरइत छी सूखल सरिताप्राण।" [7]

निष्कर्ष

एहि प्रकारक कवितामे राजकमलक जीवन–दर्शन व्यक्त होइत अछि। मनुष्यक आवश्यकताक क्रम एतय स्पष्ट अछि। मनुष्यकेँ जीबाक इच्छा होइत छैक। जीबा लेल वासना आवश्यक नहि अछि, मुदा जीबि गेलाक पश्चात् ओ शारीरिक, मानसिक भूखसँ फराक नहि रहि पबैत अछि। ई अनिवार्यता जीबि गेलाक बाद थिक। तेँ पहिने रोटी अर्थात् भूख आकि सेक्स, एहि प्रश्नक उत्तर, राजकमलक व्यक्तिगत जीवन–दर्शनमे स्पष्ट होइत अछि आ ई शाश्वतो अछि।

संदर्भ सूची

1. कविता राजकमलक– सम्पादक मोहन भारद्वाज, मैथिली अकादमी, पटना, 1981, पृ०–63
2. मैथिली साहित्यक इतिहास– डा० दुर्गानाथ झा 'श्रीश', भारती पुस्क केन्द्र, पृ०–40
3. कविता राजकमल, पृ०–28
4. ओतहि, पृ०– 41
5. ओतहि, पृ०– 41
6. स्वरगंधा– राजकमल चौधरी, त्रिवेणी प्रकाशन, दरभंगा, 1958, पृ०– 4–5
7. ओतहि, पृ०–5